शब्दकोश

इस शब्दकोश से आपको इस पुस्तक के पाठों तथा कुछ उनसे जुड़े नए शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। नीचे बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ दिया गया है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक पर्याय भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्दों में से किस भेद का है, यह सूचना आपको इस संकेताक्षर से मिलेगी। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं–

अ.	–	अव्यय	अ.क्रि.	–	अकर्मक क्रिया
क्रि.	–	क्रिया	क्रि.वि.	–	क्रिया विशेषण
पु.	–	पुल्लिंग	फा.	–	फारसी
मु.	–	मुहावरा	वि.	–	विशेषण
सं.	–	संज्ञा	स.क्रि.	–	सकर्मक क्रिया
सर्व.	–	सर्वनाम	स्त्री.	–	स्त्रीलिंग

इस शब्दकोश में अपेक्षित शब्द का अर्थ ढूँढ़ना शुरू करने से पहले यह उचित होगा कि शब्दकोश देखने की सही विधि आप जान लें। इसके लिए नीचे लिखे बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा–

1. जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके प्रारंभ का वर्ण देखा जाता है। उसके आधार पर ही शब्द ढूँढ़ा जाता है।
2. शब्दकोश में शब्दों को इस वर्ण-अनुक्रम में दिया जाता है–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् क से ह तक के सही वर्ण क्रम के अनुसार।

www.dreamtopper.in

3. क्ष, त्र, ज्ञ को ह के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए। क्ष, क् और ष का संयुक्त रूप है। अतः क से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर क्ष से प्रारंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।
4. त्र, त् और र का संयुक्त रूप है। अतः त्र से शुरू होने वाले शब्द त से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़े जाने चाहिए। त्य से संबंधित शब्द जब समाप्त हो जाते हैं तब त्र से आरंभ होनेवाले शब्द देखे जा सकते हैं।
5. ज्ञ, ज् और ञ का संयुक्त रूप है। अतः ज्ञ से शुरू होने वाले शब्दों को ज से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। ज से संयुक्त होकर बनने वाला पहला वर्ण ज्ञ ही है। अतः जौहरी के बाद ही ज्ञ से बनने वाले शब्द देखे जा सकते हैं। ज्ञ के बाद ज्य से बनने वाले शब्द आते हैं।

www.dreamtopper.in

शब्दार्थ

अंत्येष्टि	–	स्त्री.(सं.) मृतक कर्म, दाह कर्म
अकबकाना	–	वि. भौंचक्का होना, घबराना
अजीबो–गरीब	–	वि. अनोखा
अपन	–	सर्व. अपना
असीम	–	वि. जिसकी कोई सीमा न हो, अपार
अहमियत	–	वि.(अ.) महत्व
आँकना	–	क्रि. अनुमान लगाना
आपा	–	पु.(सं.) अहं
आलम	–	पु.(अ.) दुनिया, माहौल
आलीशान	–	(वि.) शानदार
आवाजाही	–	(स्त्री.) आना–जाना, आवागमन
आहि	–	अ.क्रि. है
इत्ते–सारे	–	वि. इतने सारे
ईज़ाद	–	क्रि. खोज, अन्वेषण

उजरत	–	वि.(अ.) मजदूरी, मेहनत का बदला, पारिश्रमिक
उजागर	–	वि. प्रकट करना
उपानह	–	पु. जूता
एसएमएस	–	अ. लघु संदेश सेवा
कर	–	पु.(सं.) हाथ
कसर	–	स्त्री.(अ.) घाटा पूरा करना, कमी
काढ़त	–	अ.क्रि. बाल बनाना
किरदार	–	पु. अभिनेता की भूमिका, चरित्र
कुमक	–	स्त्री.(फा.) फौजी टुकड़ी
कोर्ट मार्शल	–	पु. फौजी अदालत
खपत	–	स्त्री. माल की बिक्री, आपूर्ति
खमा	–	स्त्री. क्षमा
खयाल	–	पु.(फा.) विचार
खिताब	–	पु.(अ.) उपाधि, सम्मान
खुराफाती	–	वि. शरारती
खोंते	–	पु. घोंसले
गंतव्य	–	वि.(सं.) स्थान जहाँ किसी को जाना हो
गफश	–	वि. गफ्स, घना बुना हुआ
गात	–	पु. शरीर
गारी	–	स्त्री. गाली, अपशब्द
गुडविल	–	अ. सुनाम, अच्छी छवि
गुहत	–	स.क्रि. गूँथना
गोता	–	पु.(अ.) पानी में डूबना
गोरस	–	पु. दूध, दही मक्खन, घी आदि
घमासान	–	पु. घोर, भयानक
घिसीपिटी	–	वि. जो बहुत दिनों से चली आ रही, पुरानी
घूरा	–	पु. कूड़े-करकट का ढेर

www.dreamtopper.in

चकिसों	–	वि. चकित, विस्मित
चाम	–	पु. त्वचा, चमड़ा
चाव	–	पु. चाह, तीव्र इच्छा
चारपाई	–	स्त्री. खाट, छोटा पलंग
चिहाकर	–	स.क्रि. चौंककर, चकित होकर
जायजा	–	पु.(अ.) जाँच-परख
जुगाड़	–	पु. उपाय
जुरत (जुरअत)	–	स्त्री. बहादुरी, साहस
जुरतो (जुरत)	–	अ.क्रि. जुटना, एकत्र होना, प्राप्त होना
जोए	–	पु. ढूँढ़ना, देखना, खोजना
जोटी	–	स्त्री. जोड़ी
झँगा	–	पु. ढीला कुरता
झुटपुटा	–	पु. सबेरे या शाम का समय जब प्रकाश इतना कम हो कि कोई चीज़ साफ़ दिखाई न दे, वह समय जब कुछ-कुछ अँधेरा और कुछ-कुछ उजाला हो
टहलुआ	–	पु. नौकर
डलिया	–	स्त्री. बाँस का बना एक छोटा पात्र
डामलफाँसी	–	पु. आजीवन कारावास का दंड, देश निकाला
डिस्क फॉर्म	–	रिकॉर्डिंग का एक रूप
ढरकी	–	स्त्री. कपड़ा बुनते हुए जुलाहे जिससे बाने का सूत फेंकते हैं, भरनी
ढँढोरि	–	स.क्रि. ढूँढ़ना
ढाँणी	–	स्त्री (सं.) अस्थायी निवास, कच्चे मकानों की बस्ती जो गाँव से कुछ दूर बनी हो
ढाँढ़स	–	पु. दिलासा, धीरज
ढोटा	–	पु. लड़का

www.dreamtopper.in

तंद्रालस – स्त्री.(सं.), वि.(सं.) नींद से अलसाया हुआ
तनख्वाह – स्त्री.(फा.) वेतन, पगार
तरकारी – स्त्री. सब्जी
तह – स्त्री.(फा.) गहराई
ताउम्र – प्र.(सं.)स्त्री.(अ.) उम्र भर
दड़बे – पु. मुर्गियों के रहने की जगह
दबीज – वि. (फा.)मोटा, मजबूत
दबैल – वि. दब्बू
दस्तावेज़ – स्त्री.(फा.) प्रमाण संबंधी कागजात, प्रमाण पत्र
दहुँ – पु. दस
दालान – पु. बरामदा
दुपटी – स्त्री. अंगोछा, गमछा
दुहेली – स्त्री. दुख, दुख में पड़ा हुआ, कष्ट साध्य
दिसि – स्त्री. दिशा
द्विज – पु.(सं.) ब्राह्मण
धर्मभीरु – पु.(वि.) जिसे धर्म छूटने का भय हो, अधर्म से डरने वाला
धींगा-मुश्ती – वि.(स्त्री.) धक्का-मुक्की, लड़ना-भिड़ना, शरारत
धुआँधार – पु.(वि.) ताबड़तोड़
नगीना – सं.(पु.) नग, रत्न
नफासत – स्त्री. सज्जा, सजा-सँवरा
न्योता – पु. निमंत्रण
नाजुक – वि.(फा.) कोमल
नायाब – वि. बहुमूल्य, बेशकीमती
निद्रित – वि.(सं.) सोया हुआ
निमित्त – पु.(सं.) कारण
पखने – पु. पंख

www.dreamtopper.in

पगड़ी — स्त्री. सिर पर लपेटकर बाँधा जाने वाला लम्बा कपड़ा

पगा — पु. पगड़ी

पचि-पचि — पु. बार-बार

पटकथा — पु. फिल्म के लिए लिखी जाने वाली कहानी

पठवनि — स.क्रि. भेजना, विदाई

पनही — स्त्री. जूता

परात — स्त्री. थाली की तरह का पीतल आदि धातु से बना एक बड़ा और गहरा बरतन

पर्दाफ़ाश — पु. भेद खोलना, दोष प्रकट करना

पाँख — पु. पंख, पर

पाखी — पु. पक्षी, चिड़िया

पाछिली — वि. पिछला

पात — पु. पत्ता

पार्श्वगायक — वि.(सं.), पु.(सं.) पर्दे के पीछे से गाने वाला

पैतृक — वि.(सं.) पूर्वजों का, पिता से प्राप्त

प्रत्यूष — पु.(सं.) प्रातःकाल, भोर

प्रयाण — पु.(सं.) प्रस्थान, मरना

प्रशस्ति पत्र — स्त्री.(सं.), पु. प्रशंसा पत्र

फकत — वि.(अ.) केवल

फदगुद्दी — स्त्री. एक छोटी चिड़िया, गौरैया

फबना — अ.क्रि. सजना, शोभा देना

फब्ती — स्त्री. चोट करने वाली या चुभती बात

फरमान — पु.(फा.) राजाज्ञा

फिकर — स्त्री. चिंता, फिक्र

फुँदने — पु. सूत, ऊन आदि का फूल या फुलगेंदा

फुँदनेदार — पु. फुलगेंदेवाला

www.dreamtopper.in

फुलेल – पु. खुशबूदार तेल

फैंटेसी – वि. काल्पनिक

फोकट – वि. मूल्यरहित, मुफ्त

बटालियन – स्त्री.(सं.) पलटन

बाँचना – स.क्रि. पढ़ना, सस्वर पढ़ना

बियाबान – पु. जंगल, उजाड़खंड, निर्जन

बिलोकना – स.क्रि. देखना, अवलोकन करना

बिवाइन – स्त्री. पाँव की ऐड़ी का फटना

बेगार – स्त्री.(फा.) बिना मजदूरी का काम

बेनी – स्त्री.(सं.) चोटी

बैरी – पु. दुश्मन

भगोने-डोंगे – पु. भोजन पकाने के बर्तन

भिनसार – पु. प्रात:काल, सवेरा

भुई – स्त्री.(सं.) पृथ्वी, भूमि

मचिया – स्त्री. बैठने के उपयोग में आने वाली सुतली से बुनी छोटी/चौकोर खाट

मनुहार – पु. मनाना

मरहम-पट्टी – पु.(अ.)स्त्री. जख्म का इलाज, घाव पर दवा लगाकर पट्टी बाँधना

मल्लार – पु.(अ.) मल्हार, संगीत का एक राग

मशगूल – वि.(अ.) व्यस्त

महावत – पु. हाथीवान

मातम – पु.(अ.) शोक मनाना

मानिंद – वि.(फा.) जैसा, अनुरूप, सरीखा

मामूल – वि.(अ.) वह बात जो रोज की जाए, हमेशा की तरह

www.dreamtopper.in

मुँगरी – सं. गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोकने-पीटने के काम आती है

मुँडेर – पु.(सं.) छत के आस-पास बनाई जाने वाली दीवार

मुखातिब – वि.(अ.) देखकर बात करना

मुलुक – पु. मुल्क, देश

मुस्तैद – वि. तत्पर, तैयार रहना

मूजी – वि.(सं.) दुष्ट

म्यान – पु.(फा.) तलवार रखने का कोष

मोरी – स्त्री. नाली, गंदे पानी की नाली

यकीन – पु.(अ.) विश्वास

लगुए-भगुए – वि. पीछे चलने वाले, मेल-जोल के व्यक्ति

लटजीरा – पु. चिचड़ा, एक पौधा

लटी – स्त्री. लटकी हुई, लटकना

लथपथ – वि. सना हुआ, तर

लफड़ा – पु. उलझन, झंझट

लवाजिमा – पु.(अ.) यात्रा आदि में साथ रहने वाला सामान

लशकरी – पु.(फा.) पलटन, सेना

लस्टम-पश्टम – अ. अंट-शंट, अव्यवस्थित रूप

लोटी – क्रि. लोटने वाली

वर्णनातीत – वि. जिसका वर्णन न किया जा सके

वसुधा – स्त्री. पृथ्वी

वाकई – क्रि.वि. बिलकुल, सचमुच

वस्तु विनिमय – पु.(सं.) पैसों से न खरीदकर एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना

शिखर – पु. पहाड़ की चोटी

संवाद – पु.(सं.) फिल्म में की जाने वाली बातचीत

सकत – स्त्री. शक्ति, सामर्थ्य

www.dreamtopper.in

सरापा	–	अ.(फा.) सिर से पाँव तक पहना जाने वाला वस्त्र
सलाख	–	स्त्री. सलाई, धातु की छड़
सवाक् फिल्म	–	पु.(सं.) मूक फिल्म के बाद बनी बोलती फिल्म
साँसत	–	कठिनाई में पड़ना, बड़ा कष्ट
सांगोपांग	–	वि.(सं.) पूरी तरह, ऊपर से नीचे तक
सिटपिटाना	–	अ.क्रि. भय या घबड़ाहट से सहम जाना
सिलसिला	–	वि. संबंध, कड़ी
सिवा	–	अ.(अ.) सिवाय, अलावा, अतिरिक्त
सींके	–	पु. छींका जिस पर दूध-दही आदि रखा जाता है
सुमिरन	–	क्रि. ईश्वर के नाम का जप (भक्ति का एक प्रकार), स्मरण
सुहावत	–	वि. सुंदर/भला, सुहाना लगना
सेंत-मेंत का काम	–	स्त्री.(अ.) वह काम जिसके लिए कुछ देना न पड़ा हो, बिना लाभ का काम
सौरभ	–	पु. सुगंध, सुबास
स्वच्छंद	–	पु. अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला
हटकि	–	स्त्री. मनाही
हरकारा	–	पु. दूत, डाकिया, संदेश पहुँचाने वाला
हरि-हलधर	–	पु.(सं.) कृष्ण-बलराम
हस्ती	–	वि.(सं.) अस्तित्व
हवाला	–	पु.(सं.) उल्लेख करना, उद्धरण
हुलस	–	अ.क्रि. उल्लास
हुनरमंद	–	पु.(फा.) वि.कुशल, गुणी कारीगर
हैसियत	–	स्त्री.(सं.) दरजा
हौले से	–	अ. धीरे से

www.dreamtopper.in

टिप्पणी

www.dreamtopper.in